eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 07, Issue 02, July 2024

बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत पाकिस्तान सम्बध

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0

Received: 20 July 2024, Accepted: 28 July 2024, Published with Peer Reviewed on line: 31 July 2024

Abstract

यह एक गंभीर विषय है जिसमें भारत और पाकिस्तान के संबंधों का ऐतिहासिक, राजनयिक, आर्थिक, और सुरक्षा से जुड़ा विश्लेषण शामिल होगा। भारत और पाकिस्तान के संबंधों का इतिहास जटिल, संघर्षपूर्ण और उतार–चढ़ाव से भरा रहा है। 1947 में भारत के विभाजन के बाद से ही दोनों देशों के बीच राजनीतिक, सैन्य, और कूटनीतिक तनाव बना हुआ है। हालांकि, वैश्विक परिदृश्य में हो रहे परिवर्तनों और नई भू–राजनीतिक रणनीतियों ने इन संबंधों पर भी प्रभाव डाला है। यह लेख भारत–पाकिस्तान संबंधों के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, मौजूदा स्थिति और भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करेगा।

शब्द कुंजी– बदलते वैश्विक परिदृश्य, भारत, पाकिस्तान सम्बध, इतिहास, राजनीति, संस्कृति, सैन्य मामले।

Introduction

भारत और पाकिस्तान का संबंध इतिहास, राजनीति, संस्कृति, और सैन्य मामलों से गहराई से जुड़ा हुआ है। 1947 में विभाजन के बाद से दोनों देशों के बीच कई युद्ध हुए हैं, और कश्मीर विवाद आज भी एक बड़ा मुद्दा बना हुआ है। इसके अलावा, आतंकवाद, व्यापार, कूटनीति और सामाजिक–सांस्कृतिक संबंधों ने भी दोनों देशों के रिश्तों को प्रभावित किया है। 1947 में ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता के साथ ही भारत का विभाजन हुआ, और पाकिस्तान एक अलग देश के रूप में अस्तित्व में आया। इस विभाजन के कारण बड़े पैमाने पर दंगे हुए, और लाखों लोग विस्थापित हुए। विभाजन के तुरंत बाद कश्मीर का मुद्दा दोनों देशों के लिए एक संवेदनशील विषय बन गया। पाकिस्तान समर्थित कबायली लड़ाकों ने कश्मीर पर हमला किया, जिससे भारत ने अपनी सेना भेजी। इसके बाद 1949 में संयुक्त राष्ट्र के हस्तक्षेप से युद्धविराम हुआ, और कश्मीर को दो हिस्सों में विभाजित कर दिया गया, भारतीय नियंत्रित जम्मू–कश्मीर और पाकिस्तान नियंत्रित गिलगित–बाल्टिस्तान एवं आज़ाद कश्मीर।

भारत–पाकिस्तान संबंधों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारत और पाकिस्तान के बीच 1947 में विभाजन के बाद से कई संघर्ष हुए हैं। प्रमुख घटनाएं इस प्रकार हैं–

1. 1947–48 का युद्ध, कश्मीर को लेकर पहला युद्ध हुआ, जो संयुक्त राष्ट्र के हस्तक्षेप के बाद युद्धविराम के साथ समाप्त हुआ। इसके परिणामस्वरूप कश्मीर दो भागों में बंट गया – भारतीय नियंत्रण वाला जम्मू और कश्मीर तथा पाकिस्तान नियंत्रित गिलगित–बाल्टिस्तान और पीओके।
2. 1965 का युद्ध, यह युद्ध भी कश्मीर को लेकर हुआ, लेकिन कोई बड़ा क्षेत्रीय बदलाव नहीं हुआ।
3. 1971 का युद्ध और बांग्लादेश का गठन, इस युद्ध में पाकिस्तान को करारी हार मिली और बांग्लादेश एक स्वतंत्र राष्ट्र बना।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 07, Issue 02, July 2024

4. 1999 का कारगिल युद्ध, पाकिस्तान समर्थित घुसपैठियों द्वारा नियंत्रण रेखा पार करने के कारण यह संघर्ष हुआ, जिसमें भारत को जीत मिली।

5. भारत–पाकिस्तान संबंधों में कश्मीर विवाद की भूमिका– कश्मीर के महाराजा हरि सिंह ने भारत में विलय का निर्णय लिया, लेकिन पाकिस्तान ने इसे अस्वीकार किया। 1990 के दशक से पाकिस्तान समर्थित आतंकवादी संगठनों ने भारत में हमले किए। हिजबुल मुजाहिदीन, जैश–ए–मोहम्मद, और लश्कर–ए–तैयबा जैसे समूह कश्मीर में हिंसा फैलाने के लिए ज़िम्मेदार हैं।

6. भारत और पाकिस्तान के बीच कूटनीतिक संबंध, शांति वार्ताएँ और समझौते– ताशकंद समझौता (1966), 1965 के युद्ध के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच शांति वार्ता हुई। शिमला समझौता (1972), 1971 के युद्ध के बाद समझौता हुआ, जिसमें दोनों देशों ने विवादों को शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाने की प्रतिबद्धता जताई। अग्रा सम्मेलन (2001), तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और परवेज मुशर्रफ के बीच हुई वार्ता विफल रही। 2008 मुंबई हमले के बाद संबंधों में तनाव, 2008 में लश्कर–ए–तैयबा द्वारा किए गए मुंबई हमले के बाद दोनों देशों के संबंध बेहद खराब हो गए।

5. प्रमुख आतंकवादी हमले और पाकिस्तान की भूमिका

2001 भारतीय संसद पर हमला
2008 मुंबई हमला
2016 उरी हमला और सर्जिकल स्ट्राइक
2019 पुलवामा हमला और बालाकोट एयरस्ट्राइक

6. व्यापार और आर्थिक संबंध, भारत और पाकिस्तान के व्यापारिक संबंध ऐतिहासिक रूप से तनावपूर्ण रहे हैं। हालांकि, 2011 में व्यापार को बढ़ावा देने के लिए कई पहलें की गईं, लेकिन पुलवामा हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान से मोस्ट फेवर्ड नेशन का दर्जा वापस ले लिया।

7. भारत–पाकिस्तान के सांस्कृतिक और सामाजिक संबंध, क्रिकेट और खेल, क्रिकेट दोनों देशों में बेहद लोकप्रिय है, और भारत–पाकिस्तान के मैच वैश्विक ध्यान आकर्षित करते हैं। हालांकि, राजनीतिक तनाव के कारण द्विपक्षीय क्रिकेट सीरीज़ नहीं हो पा रही है।, भारतीय फिल्में पाकिस्तान में बेहद लोकप्रिय हैं, लेकिन राजनीतिक कारणों से पाकिस्तानी सरकार ने कई बार भारतीय फिल्मों पर प्रतिबंध लगाया है। दोनों देशों की जनता के बीच दोस्ती और मेल–मिलाप की भावना देखी जाती है, लेकिन राजनीतिक तनाव के कारण यह सीमित रहती है।

8. 2019 में अनुच्छेद 370 हटाने के बाद संबंधों में गिरावट– 2019 में भारत सरकार ने जम्मू–कश्मीर से विशेष दर्जा हटाया, जिससे पाकिस्तान ने कड़ी प्रतिक्रिया दी और भारत के साथ राजनयिक संबंध सीमित कर दिए। महामारी के दौरान दोनों देशों के बीच मानवीय सहयोग की संभावनाएँ बनीं, लेकिन राजनीतिक मतभेद जारी रहे। भविष्य में भारत और पाकिस्तान के संबंध इस बात पर निर्भर करेंगे कि दोनों देश आतंकवाद, व्यापार, और कश्मीर विवाद को हल करने के लिए किस हद तक समझौता कर सकते हैं।

मौजूदा परिदृश्य में भारत–पाकिस्तान संबंध

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 07, Issue 02, July 2024

1. आतंकवाद और सुरक्षा चिंताएँ, पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद भारत–पाक संबंधों में एक प्रमुख बाधा है। 2001 की संसद पर हमला, 2008 का मुंबई हमला और 2019 का पुलवामा हमला इस तनाव को बढ़ाने वाले मुख्य कारक रहे हैं।
2. कश्मीर मुद्दा, कश्मीर का विशेष दर्जा खत्म करने (अनुच्छेद 370 हटाने) के भारत के फैसले ने पाकिस्तान के साथ तनाव और बढ़ा दिया है।
3. राजनयिक संबंध, कई बार भारत और पाकिस्तान ने राजनयिक संबंधों को कम किया है। दोनों देशों ने वार्ता प्रक्रिया को कई बार रोका और फिर से शुरू किया है।
4. व्यापार और आर्थिक संबंध, 2019 में पुलवामा हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान से व्यापारिक संबंध समाप्त कर दिए।
5. संस्कृति और लोगों के बीच संबंध, क्रिकेट, सिनेमा और साहित्य जैसे माध्यमों से दोनों देशों के बीच जनता के स्तर पर जुड़ाव बना रहता है।

वैश्विक परिदृश्य में हो रहे बदलाव और उनके प्रभाव

1. चीन की भूमिका, चीन, पाकिस्तान का करीबी सहयोगी रहा है। चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा और सैन्य सहयोग भारत के लिए चिंता का विषय हैं।
2. अमेरिका और रूस की नीति, अमेरिका भारत के साथ रणनीतिक साझेदारी को मजबूत कर रहा है, जबकि पाकिस्तान चीन के करीब जा रहा है।
3. मध्य एशिया और अफगानिस्तान, अफगानिस्तान में तालिबान की वापसी ने क्षेत्रीय सुरक्षा को प्रभावित किया है, जिससे भारत और पाकिस्तान दोनों की नीति प्रभावित हो रही है।
4. आर्थिक कारक, पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति गंभीर संकट में है, और इसे स्थिर करने के लिए उसे अंतरराष्ट्रीय सहायता की आवश्यकता है।

भविष्य की संभावनाएँ और चुनौतियाँ

1. शांति वार्ता का भविष्य, भारत और पाकिस्तान के बीच संवाद बहाल करने की संभावनाएं हमेशा बनी रहती हैं, लेकिन आतंकवाद और सीमा पर तनाव इसमें बाधा डालते हैं।
2. व्यापार और आर्थिक सहयोग, व्यापारिक संबंधों में सुधार दोनों देशों की अर्थव्यवस्था के लिए लाभकारी हो सकता है।
3. रणनीतिक संतुलन, परमाणु शक्ति संपन्न दोनों देशों के बीच संतुलन बनाए रखना क्षेत्रीय शांति के लिए आवश्यक है।
4. वैश्विक कूटनीति, भारत की वैश्विक स्थिति मजबूत हो रही है, जबकि पाकिस्तान आर्थिक और राजनयिक चुनौतियों का सामना कर रहा है।

वैश्विक परिदृश्य में भारत–पाकिस्तान संबंधों का नया दृष्टिकोण

भारत और पाकिस्तान के बीच संबंध दशकों से जटिल और तनावपूर्ण रहे हैं। ऐतिहासिक, राजनीतिक, धार्मिक, और भू–राजनीतिक कारकों के कारण इन दोनों पड़ोसी देशों के बीच संबंध अक्सर संघर्ष और संवाद के बीच झूलते रहते हैं। हालांकि, बदलते वैश्विक परिदृश्य और नई भू–राजनीतिक वास्तविकताओं के आलोक में, भारत–पाकिस्तान संबंधों को एक नए दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 07, Issue 02, July 2024

1947 में भारत और पाकिस्तान के विभाजन के बाद से, दोनों देशों के बीच तीन प्रमुख युद्ध (1947, 1965, 1971) और कई छोटे संघर्ष हुए हैं, जिनमें कारगिल युद्ध (1999) भी शामिल है। इसके अलावा, आतंकवाद, सीमा विवाद, और कश्मीर मुद्दा संबंधों में तनाव बनाए रखते हैं।

वैश्विक शक्ति संतुलन– वर्तमान में दुनिया बहुध्रुवीय होती जा रही है, जहाँ अमेरिका, चीन, रूस और यूरोपीय संघ जैसी शक्तियाँ विभिन्न रणनीतिक हितों के साथ उभर रही हैं। अमेरिका और चीन के बीच बढ़ता टकराव भारत को एक महत्वपूर्ण रणनीतिक खिलाड़ी बना रहा है, जिससे पाकिस्तान पर भू–राजनीतिक दबाव बढ़ रहा है।

क्षेत्रीय सहयोग और आर्थिक कारक– दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन और चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा जैसी परियोजनाएँ भारत–पाकिस्तान संबंधों को नए दृष्टिकोण से देखने के लिए प्रेरित कर सकती हैं। पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण वह अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और अन्य वित्तीय संगठनों पर निर्भर हो गया है, जिससे आर्थिक स्थिरता के लिए भारत के साथ संबंध सुधारना लाभदायक हो सकता है।

आतंकवाद और सुरक्षा चुनौतियाँ– वैश्विक स्तर पर आतंकवाद के खिलाफ बढ़ती एकजुटता के कारण पाकिस्तान को अपनी आतंकवाद समर्थक नीतियों की समीक्षा करनी पड़ी है। फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स ने पाकिस्तान पर अपनी नीतियों को सुधारने का दबाव डाला है, जिससे भारत–पाक संबंधों में संभावित सुधार की गुंजाइश बन सकती है।

भारत–पाकिस्तान संबंधों में नए दृष्टिकोण की संभावनाएँ–

(क) कूटनीतिक संवाद और शांति प्रयास– भारत और पाकिस्तान को पारस्परिक संवाद के लिए नए चौनल खोलने चाहिए, ताकि आपसी समस्याओं को हल करने के व्यावहारिक समाधान खोजे जा सकें। बैक–चौनल डिप्लोमेसी और तीसरे पक्ष की मध्यस्थता (जैसे संयुक्त राष्ट्र या खाड़ी देश) भी सहायक हो सकती हैं।

(ख) आर्थिक और व्यापारिक सहयोग– भारत और पाकिस्तान के बीच व्यापार बहाली से दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं को लाभ होगा। ट्रेड फॉर पीस (शांति के लिए व्यापार) जैसी रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं।

(ग) सांस्कृतिक और जन–स्तरीय संवाद– दोनों देशों के नागरिकों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान, खेल प्रतियोगिताओं, और पर्यटन को बढ़ावा देने से परस्पर विश्वास बढ़ सकता है। बॉलीवुड और पाकिस्तानी कला–संस्कृति का पारस्परिक प्रभाव भी लोगों को करीब ला सकता है।

(घ) जल संसाधन प्रबंधन– सिंधु जल संधि जैसे समझौतों को और प्रभावी बनाकर दोनों देशों के बीच तनाव कम किया जा सकता है।

बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत–पाकिस्तान संबंधों को नए दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है। दोनों देशों के बीच शांति और स्थिरता क्षेत्रीय और वैश्विक शांति के लिए आवश्यक है। हालांकि, आतंकवाद, सुरक्षा, और कश्मीर जैसे मुद्दे इन संबंधों को जटिल बनाए रखते हैं। भविष्य में कूटनीतिक संवाद, आर्थिक सहयोग, और आपसी विश्वास बहाली ही स्थायी शांति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 07, Issue 02, July 2024

भारत और पाकिस्तान के संबंध ऐतिहासिक रूप से तनावपूर्ण रहे हैं, लेकिन बदलते वैश्विक परिदृश्य में नए दृष्टिकोण से दोनों देशों के बीच शांति और सहयोग की संभावनाएँ बढ़ रही हैं। कूटनीति, व्यापार, सांस्कृतिक संवाद और क्षेत्रीय सहयोग के माध्यम से दोनों देश अपने मतभेदों को कम कर सकते हैं और भविष्य की ओर बढ़ सकते हैं। युद्ध और संघर्ष की नीति से बाहर निकलकर सहयोग और संवाद की नीति अपनाने से न केवल भारत और पाकिस्तान, बल्कि पूरे दक्षिण एशिया को लाभ हो सकता है।

शांति ही एकमात्र रास्ता है, जो दोनों देशों को स्थिरता और समृद्धि की ओर ले जा सकता है। भारत–पाकिस्तान के संबंधों में लगातार उतार–चढ़ाव आते रहे हैं। दोनों देशों के बीच विवादों को हल करने के लिए कूटनीति और वार्ता महत्वपूर्ण हो सकती है। हालाँकि, जब तक आतंकवाद और सीमा पार संघर्ष जारी रहेगा, तब तक इन संबंधों में स्थायित्व आना मुश्किल रहेगा।

संदर्भ सूची–

1- भारत पाकिस्तान सम्बध, जें0 एन0 दीक्षित, प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ. 534, वर्ष 2021, ISBN 9789352664009
2- परिवर्तनशील विश्व में भारत की रणनीति, एस जयशंकर, पृष्ठ. 230, वर्ष 2021, ISBN-9789390366507
3- भारतीय विदेश नीति, जें0 एन0 दीक्षित, प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ. 408, वर्ष 2021, ISBN-9789352665129
4- दैनिक जागरण, 21 दिसम्बर 2023
5- अमरउजाला, 14 मार्च 2024
6- दैनिक जागरण, 22 दिसम्बर 2022
7- योजना, नवंबर 2021
8- योजना, अगस्त 2021
9- https://www.bbc.com/
10- https://www.bhaskar.com/
11- https://edition.cnn.com/
12- https://www.nbcnews.com/
13- अमरउजाला, 21 दिसम्बर 2024
14- द हिन्दू, 02 दिसम्बर 2023
15- द हिन्दू, 19 दिसम्बर 2024
16- दैनिक जागरण, 08 दिसम्बर 2024
17- योजना, दिसम्बर 2022